# CHAPTER-VI

# MEMBERS BLOSSOM

*(DISCLAIMER: AIACE neither takes responsibility of Originality and veracity of contributions nor subscribe to the theme and views of the contributors)*

***R. A. Manjunatha Prasad***

***Retd. Finance Manager, WCL***

***M-535***

## सुभाषितानि

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

Narrow minded people think of everyone as this is mine that is of others. For a truly awakened mind the entire world (*vasudha eva)* is his one family. This shloka from Maha Upanishad is the foundation of Hindu philosophy.

यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहव: स तु जीवति ।
काकोऽपि किम् न कुरुते चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ॥

पंचतंत्र

If the 'living' of a person results in 'living' of many other persons, only then consider that person to have really 'lived'. Look even the crow fills its own stomach by its beak! (There is nothing great in working for our own survival) This subhashita asks a very basic question. What are all the humans doing ultimately? Working to feed themselves (and their family). So even a bird like crow does this! Let all members of AIACE live for others!

समानी व आकूति: समाना हृदयानि व: |
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति ||

ऋग्वेद

"United be your purpose, harmonious be your feelings, collected be your mind, in the same way as all the various aspects of the universe exist in togetherness, wholeness. This 'śloka' can be called as a 'saṅgaṭhan-sūkta' i.e. guidelines for building an impressive organisation/nation.

Adopt this attitude in our efforts to build AIACE

अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते |
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ||

Lakshmana, even this golden Lanka does not appeal to me. Mother and motherland are superior even to heaven.

Thus spoke Sri Ramachandra when he was asked to become the King of Lanka.

साक्षरा: विपरीताश्चेद् राक्षसा: एव केवलम् ।
सरसो विपरीतश्चेत् सरसत्वम् न मुञ्चति ||

If the word “SAAKSHARA” is reversed it becomes “RAAKSHASA”. But if the word “SARAS” (Noble) is reversed it still remains “SARAS”. Mere learning to read and write will not elevate a man, he should learn how to conduct himself from noble persons.

उद्यमो साहसं धैर्यं बुद्धिर्शक्तिर्पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवो सहाय्यकृत्॥

God assists wherever these six qualities viz. entrepreneurship, courage, perseverance, intellect, strength and prowess exist.

**Friends, how appropriate this is today in our struggle for revision of pension.**

**नमिता सेनगुप्ता**
**पत्नी, स्व. के आर सेनगुप्ता**
**सदस्य संख्या-A-20109**

## 1. श्रमिक

श्रम साधना के हवन कुंड मे
अपना अमूल्य जीवन किया समर्पित
नीलकंठ बन किया विषपान
उत्थान अमिय किया हमें अर्पित

फौलादी हाथों में सृजन समाया
ध्वंस कभी नही तुम्हें भाया
मोड़ दिया नदियों की प्रचंड धारा
मरुभूमि को हरितिमा बनाया

तुम्हारा श्रमसीकर जब माटी छूता
सारा उन्नयन नही रहता अछूता
विश्वकर्मा सा गढ़ता कोना कोना
उत्खनन कर लाता कोयला सोना

हे श्रमिक तुम हो कौन
सह मन की पीड़ा करे श्रम मौन
निरंतर ग्रीष्म शीत वर्षा ऋतु में
कृषकाय आहूति दे उद्यम में

तुम्हारे श्रम साधना पर है निहित
समृद्धि का पथ समायोजित
हे श्रमसाधक तुम्हें अभिनंदन वंदन
तुममें निर्माण की सृष्टि समाहित

## 2. स्वयं सिद्धा

आकांक्षाएं थी उर में अनंत
विहग बन उड़ूं दिक् दिगंत
रही अंतर्मुखी के गर्त में सदैव
आरंभ से पहले होता था अंत

दंभ के चक्रव्यूह में थी फंसी
अपनी भीरूता में स्वयं हँसी
मन देता सदैव सांत्वना
अवसादों के मकड़जाल में कसी

दर्पण में अपना प्रतिबिंब देखा
चेहरा मुखौटों से घिरा दिखा
तोड़ना है अवसादों के चक्रव्यूह को
स्वयं गढ़ना है हां ँथों की रेखा

हार को करना है पराजय
करना होगा खुद को मार्ग तय
दीप्ति बन करूं अंतर्मन प्रदीप्त
पथ नही अब दूर होगी जय

कितना धैर्य रखती प्रकृति
आपदाओं से भी नही विरक्ति
सदैव सीख देती नवसृजन की
अनुप्रेरित हो बनी प्रकृति की अनुकृति

आशाओं में भरने लगे इंद्रधनुषी रंग
जागृत हुआ उर में नव तरंग
हो गई मैं अब स्वयं सिद्धा

## 3. परिश्रम

हो परिश्रम कितना असाध्य
अगर भरना है उड़ान
तो क्यों नापें आसमान
बनाना होगा उसे श्रम
साध्य
मकड़ी गिरती उठती
फिर गिरती
कभी नही हुई बेहाल
बुनती रहती मकड़जाल
का तानाबाना
उसने श्रम को नही
बनाया पैमाना
विफलता का कर
उपहास
रचती एक इतिहास
लक्ष्य कुंड में जलाये
जा तू परिश्रम का
हवन
देकर असंभव की आहुतियाँ
अग्नि शिखा बन
दमके संभव
परिश्रम का जब छलके
पसीना
खुले खुशियों का खजाना
अपनी चाबी काठी से
खोल दे भाग्य के द्वार
चाहे हो कितना दुर्निवार

**Miss Khushnuma Sanobar**
**Age-14 years, student of Class- IX,**
**Madhusthali Vidyapeeth, Madhupur**
**Grand daughter, M. Z. Ali**
**Membership No. -M-941**

## Looking through the glass

Looking through the glass
Forcing the tears into amass
Embracing the outcast
Inside all forecast-
Fingers tipping the smell to be never smelled
Eyes were scars-holdin' ; they got to know thee
Seen happiness bleeding through cuts unstitched
It was outside my skin, so I can never feel the rhythm
The barrier the glass made- crystal clear the scars said
Looking through the glass
I forgot that I was never a part nor the past
Never live through everything that lasts

Looking through the glass
I forgot that I was just looking outside with unspoken bars
Never gonna live - all were for broken hearts packed in a jar